ISSN 2319 - 8508

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GALAXY LINK

VOLUME - VI ISSUE -I NOVEMBER-APRIL- 2017-18 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal

IMPACT FACTOR / INDEXING
2016 - **4.361**
www.sjifactor.com

✦ EDITOR ✦

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),

M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dirt), M.Ed.

✦ PUBLISHED BY ✦

Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

EDITORIAL BOARD

Editor : Vinay Shankarrao Hatole

Anukrati Sharma
Assot. Prof. Management, University of Kota, Kota.

Dr. Meenu Maheshwari
Assit. Prof. & Former Head Dept. of Commerce & Management University of Kota, Kota.

Dr. Avhad Suhas Dhondiba
Assot. Prof. in Economics Sahakar Maharshi Bhausaheb Satntuji Thorat College of Arts, Science & Commerce, Sangamner (M.S.)

Dr. Kishore Kumar C. K.
Coordinator Dept. of P. G. Studies and Research in Physical Education and Deputy Director of Physical Education, Mangalore University.

Dr. Bibhuti P. Barik
P. G. Dept. of Bioinformatics, North Orissa University Shriramchandra Vihar, Takatpur, Baripada, Odisha, India, Pin 757003.

Jatindra K. Sahu
Ph.D. Assot. Prof. Dept. of Agriculture Enginerring School of Technology Assam University (A Central Univesity Silchar - 788011] Assam, India.

Dr. Madhukar Kisano Tajne
Dept. of Psychology, Deogiri College, Aurangabad.

Muhammad Mezbah-ul-Islam
Ph.D. (NEHU, India) Assot. Prof. Dept. of Information Science and Library Management University of Dhaka, Dhaka - 1000, Bangladesh.

Dr. S. Sampath
Prof. of Statistics University of Madras Chennari 600005.

Dr. D. H. Malini Srinivasa Rao
M.B.A., Ph.D., FDP (IIMA) Assit. Prof. Dept. of Management Pondicherry University Karaikal - 609605.

Prof. U. B. Mohapatra
Ph.D. (Nottingham, UK) Director, Biotechnology Government of Odisha, Odisha Secretariat Bhubaneswar - 751001, Odisha, India.

Dr. Vijaykumar Laxmikantrao Dharurkar
Prof. and Head of Mass Communication and Journalism, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad - 431004 (M.S.)

Prof. S. D. S. Murthy
F.N.E.A., Head, Dept. of Biochemisty S. V. University Tirupati - 2, Andhra Pradesh, India.

PUBLISHED BY

Ajanta Prakashan

Jaisingpura, Near University Gate, Aurangabad. (M.S.) 431 004 (INDIA)
Contact : (0240) 2400877, Cell : 9579260877, 9822620877
E-mail : anandcafe@rediffmail.com, info@ajantaprakashan.com, Website :www.ajantaprakashan.com

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
1	The New Integral Transform and its Properties with Applications **Shaikh Sadikali Latif** **Amol D. Khandagale**	1-4
2	A Study of Performance of Mahatma Phule Backward Class Development Corporation's Special Central Assistance (SCA) Scheme: With Special Reference to Schedule Caste in Marathwada Region **Mr. Indrajeet Ramdas Bhagat**	5-13
3	CPEC and Implications for India **Dr. B. D. Todkar**	14-18
4	The Challenges Vis-A-Vis Public Health and International Patent Regime **Prof. Ravindra Wakade**	19-24
5	Analysis of Violence Against Women in the Light of Human Rights Aspects **Dr. Nilesh Deshmukh**	25-29
6	Positive Approach about G. S. T. **Prof. Dr. Ujjwala Mantri**	30-35
7	Self – Help Group in Socio – Economic Development of India **Dr. Anjali D. Kale**	36-38
8	8th November, 2017- The First Anniversary of Demonetization of Big Currency Notes **Dr.Chandrakant W. Gajewad**	39-41
9	Bioefficacy of Leaf Extract of *Tagetes Erecta* Against Linear Growth of *Taphrina Maculans* **Gurme M. K.** **Dhavle S. D.**	42-45
10	Inhibition of Alternaria Alternata Causing Diseases to Withania Sominifera By Fungicides from Jintur, Region of Maharashtra (INDIA) **Manik Khandare**	46-53

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
11	Permanganatic Oxidation of Neomycine Sulphate Salt in Basic Media: A Kinetic Study **Narayan V. Lawale** **Bhagwansing Dobhal** **Vinod Shelke** **Rajendra Pardeshi**	54-61
12	Effect of Various Fertilizers on *Solanum Melongena* **Dr. Sangita Dandwate**	62-66
13	Training in Nationalised Banks of Aurangabad Region **Dr. Shaikh Amreen Fatima**	67-69
14	Scientometric Analysis of Information Research an International Electronic Journal **Dr. Sudesh N. Dongare**	70-78
15	Judicial Perspective Relating to Ragging in India **Dr. V. G. Shinde**	79-83
16	The Impact of Meditation on Stress Among College Students **Vitore Kalpana Ramrao** **Dr. Shantaram Raypure**	84-87
17	Medical Negligence Vis-A-Vis Consumer Protection in India **Dr. Anand K. Deshmukh**	88-91
18	Crime Against Woman's Soul **Ansari Zartab Jabeen** **Dr.M. I. Baig**	92-98
19	Challenges in Training and Development **Archana Ramakant Jadhav**	99-104
20	Ethnobotanical Importance of Semicardium Anacardium and use by Tribal People of Seoni Distrct - A Comperehensive Review **S. A. Firdousi**	105-110
21	A Study of the Impact of Online Games on Learning English Vocabulary by Engineering Students **Jyoti B. Mohanty**	111-114

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
22	Analysing Stress Management Among Higher Secondary School Students Of Aurangabad City, With Respect To Gender **Muntajeeb Ali Baig**	115-119
	Hindi	
१	नक्सलवाद की समस्या का अध्ययन : कुछ केस स्टडी (जिला दन्तेवाड़ा के विशेष सन्दर्भ में) **डॉ. पवन कुमार त्रिपाठी**	१-३
२	शैक्षिक मूल्य और उसके आधार **अभिषेक सेंगर**	४-९
३	उच्च शिक्षा समस्या और समाधान **प्रा. डॉ. हुसे र. रा.**	१०-११
४	मुक्तिबोध और उनकी भूल-गलती **डॉ. कल्पना वर्मा**	१२-१४
५	गंगानी परिवार के पूरोधा – पं. हजारीलाल गंगानी **डॉ. वन्दना चौबे**	१५-१६
६	**अमित गंगानी** एक ऐतिहासिक फैसला ! तीन तलाक **प्रा. डॉ. सुलक्षणा जाधव**	१७-१९
७	**संज्योती जगन्नाथ रोठे** मुद्रित जनसंचार माध्यमों में हिन्दी भाषा: समाचार पत्र -पत्रिकाएँ **प्रा. विक्रम जी. राठोड**	२०-२१
८	अलक्षित आवाज का मर्मस्पर्शी आख्यान: सुर बंजारन **डॉ. भगवान गव्हाडे**	२२-२६
९	हिंदी का रिपोर्ताज साहित्य **प्रा. डॉ. विठ्ठल तुळशीराम वजीर**	२७-२९
१०	कबीर का भक्ति काव्य से संबंध **डॉ. पठाण ए. एम.**	३०-३२

'गॅलेक्सि लिंक' या सहामयि प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळास
मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकाची मते ही त्याची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच
शोधनिबंधाची जबाबदारी स्वत: लेखकावर राहील.
हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अॅण्ड प्रिंटर्स, जयसिंगपूरा, विद्यापीठ गेट,
औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

१०

कबीर का भक्ति काव्य से संबंध

डॉ. पठाण ए. एम.
हिंदी विभाग, सहयोगी प्राध्यापक एवं शोधमार्गदर्शक, मिल्लिया कला, विज्ञान व
व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय, बीड.

भक्ति आंन्दोलन की विचार धारा मूलत: भाववादी है। उसके जितने भी स्तर हैं, सब में यह स्वीकार किया गया है कि संसार में जो कुछ है - चर-अचर-चराचर सबका जन्म ईश्वर या ब्रह्म से हुआ है। जल, थल, प्रकाश, अंधकार, सूरज, चाँद, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य आदि सब कुछ उसी के बनाये हुए हैं। सब में समान रूप से उसकी व्याप्ति है।

भक्त कवियों की चेतना ईश्वरवादी है। इसीलिए उन्होंने हर बात को धार्मिक जामा पहनाकर कहने की कोशिश की है। एंगल्स ने मध्यकालीन यूरोपिय सुधार आन्दोलनों के बारे में लिखा है की, "मध्ययुग में धर्म के साथ विचार धारा के अन्य सभी रूप - दर्शन, राजनीति, विविध-शास्त्र को जोड़ दिया गया और उन्हें धर्म दर्शन की उपशाखाएँ बना दिया। इस तरह उसमें हर सामाजिक राजनीतिक आन्दोलन को धार्मिक जामा पहना ने के लिए विवश किया। आम जनता की भावनाओं को धर्म का चारा देकर और सब चिजों से अलग रखा गया। इसलिए कोई भी प्रभावशाली आन्दोलन आरम्भ करने के लिए अपने हितों को धार्मिक जामे में पेश करना आवश्यक था।"१

भक्ति आन्दोलन का स्वरूप मूलत: ब्राह्मणवाद, वर्णवाद और सामंतवाद विरोधी है। वह अधम से अधम व्यक्ति को बराबरी का अधिकार देता है। उसमें पात्रता का आधार भाव, तन्मयता, तीव्रता एवं आत्म-समपर्ण है। अगर ये गुण किसी व्यक्ति में हैं तो वह चाहे ब्राह्मण हो या चांडाल, हिन्दू हो या मुसलमान भगवद् भक्ति का पात्र है। भक्ति आंदोलन उस व्यवस्था का विरोध करता है जो मनुष्य-मुनष्य में जाति, वर्ण, धर्म सम्प्रदाय, आचार-विचार के आधार पर भेदभाव करता है। कुल मिलाकर भक्ति आंदोलन का स्वरूप मानववादी है। इसलिए वह मनुष्य मात्र के समानता की घोषण करता है। भक्त कवि कबीर ने कहा है कि भगवान के संमुख सब समान है उसमें कोई छोटा बड़ा नहीं है।

"जाति-पाँति पूछे न कोई हरि को भजै सो हरि का होई।"

संतो के दृष्टि में इस पृथ्वी पर मनुष्य सर्वश्रेष्ठ है। संत कवि कबीर ने इस बात की ओर इशारा किया है। संत, भक्त और गुरू इस पृथ्वी पर ईश्वर स्वरूप हैं। मनुष्य प्रेम उदात्त होकर बैकुण्ठी हो जाता है। विशुद्ध प्रेम से व्यक्ति ईश्वर को पाने के काबिल हो जाता है। भक्ति आंदोलन सन्यासी और श्रवण धर्म से अलग है। वह घर, परिवार और श्रम से पलायन करने की बात करता है। वह व्यक्ति घर, परिवार और समाज का विरोध करता है, जहाँ ये अपने में साध्य होकर भक्ति विरोधी हो जाते हैं। वहाँ भक्ति समर्थ, वैयक्तिक, पारिवारीक, सामाजिक मूल्यों की बराबर वकालत करती है। सारे मूल्य भक्ति के सहयोगी साधन रूप में स्वीकृत हैं।

"भक्ति आन्दोलन अखिल भारतीय है। देश की दृष्टि से ऐसा व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन संसार में दूसरा नहीं है। ईसा की दूसरी शताब्दी में ही आंध्रप्रदेश में कृष्णोपासना के चिह्न पाए जाते हैं। गुप्त सम्राटों के युग के विष्णु नारायण - वासुदेव की उपासना ने अखिल भारतीय रूप ले लिया।"२ पाँचवी शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक तामिलनाडु भक्ति आंदोलन का प्रमुख स्त्रोत रहा। आलवार संतो की किर्ती सम्पूर्ण भारत में फैल गयी।

कबीर की दृष्टि में ईश्वर निरूपाधिक है। वह निरंजन रूप है। वह सभी जड़ चेतन में रहते हुए भी गुप्त रहता है। सृष्टि का कर्ता, धर्ता, हर्ता होते हुए भी सृष्टि से अपने को निर्लिप्त रखता है। ईश्वर की दृष्टि में सभी समान है, चाहे पंडित हो, चाहे बैरागी, चाहे ब्राह्मण हो, चाहे शुद्र,

चाहे धनी हो, चाहे निर्धन। कबीर काव्य का अनुशीलन करने पर यह नहीं लगता कि वे किसी विचार धारा के घेरे में फँसे हुए हैं। सब कुछ को स्वीकार करते हुए भी फटकार देने वाले हैं।

कबीर की दृष्टि साफ है। लोक जीवन में 'राम' की व्याप्ति मध्यकाल में इतनी अधिक हो गयी थी कि अपने राम के लिए अलख, निरंजन, गोविन्द, गोकुल नाईक, नूर, अल्लाह, आदि हिन्दू-मुस्लिम सम्प्रदाय से संबंद्धित अनेक सम्बोधनों का प्रयोग किया गया है। भक्ति काव्य में निर्गुण और सगुण दो रूपों में ईश्वर का ब्रह्म का उल्लेख है। लेकिन उनका झुकाव निर्गुण राम की तरफ अधिक है, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि, "कबीर ने निर्गुण राम को नाथपंथी योगियों के द्वैताद्वैत विलक्षण, भावाभाव विनिर्मुक्त, अलख, अगोचर, अगम्य, प्रेम पारावर भगवान को कबीर दास ने निर्गुण राम कहकर सम्बोधित किया है।३ इस प्रकार कबीर के राम भावाभाव विनिर्मुक्त हैं। निर्गुण का मतलब है, सत, रज, तम गुण से परे। ईश्वर प्रत्यक्ष होता हुआ भी इन भौतिक प्रपंचो के ऊपर है। उनके यहाँ निर्गुण और सगुण दो भिन्न वस्तुएँ नहीं हैं। एक ही ईश्वर के दो रूप है। इसलिए निर्गुण और सगुण को बताना अनिवार्य हो जाता है। मध्ययुग में ईश्वर विषयक अवधारण को लेकर नाना प्रकार के सम्प्रदाय खड़े हो गये थे। कबीर ने ऐसा करके ईश्वर विषयक भ्रातिंयो को दूर करने की कोशिश की। उन्होंने लोगों को बताया कि ईश्वर एक है, उसे राम कहो या रहीम। डॉ. रामचंद्र तिवारी ने उपरोक्त कथन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि "कबीरदास एकेश्र्वरवादी थे। कबीरदास ब्रह्मवादी या अद्वैतवादी थे। कबीरदास नाथ एवं योग से प्रभावित और द्वैताद्वैत विलक्षण समत्ववादी थे। कबीरदास स्वतंत्र विचारक थे और उनके द्वारा प्रतिपादित परमतत्व निर्गुण - सगुण से परे अनिर्वचनीय है।४" कबीर का ब्रह्म अज्ञेय है। चारों वेद, स्मृतियाँ, पुराण आदि कोई भी उसका मर्म नहीं जानते।

"निरगुण राम निरगुण राम जपहु रे भाई।।
अविगति की गति लखी न जाई।

कबीर निगुर्ण मार्गी हो कर भी जीव को ईश्वर का अंश मानते हैं। भौतिक स्तर पर मनुष्य का शरीर नश्वर है, लेकिन उसमें अधिष्ठित आत्मा के ऊपर जब माया का आवरण आच्छन्न हो जाता है, तो वही जीव की संज्ञा प्राप्त कर लेता है। काया भेद में उसके भेद हो जाते हैं।

"सोहं हंस ऐ समान।
माटी एक सकल संसारा, बहु बिधि भांडे घडे कुँभारा।
पंच बरन दस दुहिये गाई, एक दूध देखों पतिआई।।
कहै कबीर संसा करि दूरि, त्रिभवनाथ रह्या भरपूर।।"५

कबीर एकात्मवाद का प्रतिपादन करते है। शरीर तथा इन्द्रिय समूह के अध्यक्ष और कर्मफल के भोक्ता आत्मा को ही जीव कहते हैं। समस्त संसार में एक ही मिट्टी है। सृष्टि निर्माता ब्रह्म रूपी कुम्हार ने उस मिट्टी के विविध रूप आकार वाले जीव रूपी घडे और बर्तन बनाए है। पाँच रंगो की दस गाय दुह कर देखिए। उनमें एक ही रंग का दूध होगा। कबीर कहते है कि अज्ञानावस्था में ब्रह्म और जीव में भेद रहता है, द्वैताभाव बना रहता है, लेकिन ज्ञान होने पर अभेद हो जाता है।

कर्म करना व्यक्ति का धर्म है। व्यक्ति के कर्म को न तो कोई घटा सकता है और न बढ़ा सकता है। उसके कर्म के अनुसार ही उसे फल मिलता है। इस प्रकार कर्म के सही गलत का निर्णायक ईश्वर है मनुष्य के कर्म के आधार पर उसका भूत, वर्तमान और भविष्य अवलम्बित होता है। कर्म तीन प्रकार के होते है - संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म और क्रियमाण कर्म, पर सबसे ज्यादा संचित कर्म का उल्लेख किया है लेकिन उनका बल क्रियमाण कर्म पर सबसे ज्यादा है। संचित कर्म ज्यादा व्यक्ति को नियातिवादी और आस्थावान बनाता है, जब कि क्रियमाण कर्म मानव को पुरूषार्थ की और प्रेरित करता है। कुछ भी हो कबीर कर्म की अक्षुण्णता पर बल देते हैं। उनके पदों को पढ़ने से कर्म के प्रति निष्ठा पैदा होती है। तथा कर्म करने वाले व्यक्ति के पास गहरा आत्मबल पैदा होता है। उन्होंने सकाम कर्म की भी चर्चा की है, जो मानव को पाश में बाँधता है, जब कि निष्काम कर्म इच्छा रहित और बंधन से मुक्त रखने वाला है।

"काम मिलावै राम कूँ जैकोई जाणै राषि।

कबीर बिचार क्या करै, जाकि सुखदेव बौलैं साषि।"७

इस प्रकार निष्काम कर्म ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन है। व्यक्ति को सदैव इसी कर्म को करना चाहिए। क्योंकि यह सकाम कर्म की कुल्हाडी है। सकाम कर्म मानव की साधना को भंग करता है। जिससे वह साध्य तक नहीं पहुँच पाता है।

भारतीय दर्शन मोक्ष को चरम पुरूषार्थ मानता है। मोक्ष का मतलब है जीवन मरण के चक्र से छुटकारा। तत्त्व ज्ञान हो जाने से जीव सांसारिक प्रलोभनों में नही फँसता है। इससे कर्म में प्रवृत्ति नहीं होती है। कर्म में प्रवृत्ति न होने से फल भोगने का प्रश्न ही नहीं उठता है। मध्ययुगीन भक्त संसार को भवसागर मानते हैं। सामान्य स्तर पर लोगों का विचार है कि जीवन इस संसार को छोड़ने के बाद बैकुण्ठ पहुँच जाता है। कबीरदास किसी भी बैकुण्ठ लोक में विश्वास नहीं करते है।

निश्छल मन से बड़ी बाधा है। इसलिए उसे मन को नियंत्रित रखना चाहिए। निश्छल मन से ही भगवदगुण की प्राप्ती होती है। भगवदानुरागी मन में काशी, कर्बला, द्वारिका और काबा है और जिसका मन मलिन है उसके लिए मूर्ति में मानव ज्यादा प्रेम दिखाता है, उसके लिए प्राण की बाजी लगाता है। अनजाने लोक और अनजाने पाखण्डों में ज्यादा रमता है। यदि मनुष्य की आस्था मनुष्य के प्रति हो तो सारा वैमनस्य खत्म हो जाय, पारस्पारिक सौहार्द्रता बढ़े। अजीवन कबीर इसी का प्रयत्न करते रहे, अपने काव्य के माध्यम से।

कबीर ने हिन्दूओं, मुसलमानों, ब्राह्मणों और शुद्रों के आपसी भेदभाव को दूर करने के लिए क्रांतिकारी वचनों का इस्तेमाल किया। इससे यह अनुमान लगता है कि वे समाज को महत्त्व देते ही नहीं थे। कबीर के मत से भक्ति और ब्राह्माडम्बर का सम्बंध सूर्य और अंधकार सा है। एक साथ दोनों नहीं रहे सकते है। उनका मानना है कि चलना, बोलना, खाना, सोना आदि दैनिक कर्म सब भगवत कर्म है। भक्ति का मतलब घर से पलायन नहीं है, बल्कि घर, परिवार के उत्तरदायित्वों को पूरा करने से ही भक्ति हो सकती है। इसीलिए उन्होंने सहज साधना पर बल दिया। दैनिक क्रिया व्यापार को पूरा करते हुए साधक को अपनी साधना करनी चाहिए। दैनिक जीवन और शाश्वत साधना का यह जो अविरोध भाव है, वही कबीर का सहज पंथ है।

कबीर की इस खंडनात्मक प्रवृत्ति का मूल्य ध्येय यह नहीं है कि समाज को कोई महत्त्व नहीं है। धर्म ध्वजियों के पाखंडों, कर्मकाण्डों से लोगों को हटाकर भक्ति और ईश्वर की और उन्मुख करना उनका प्रधान ध्येय है। यदि व्यक्ति पाखंडो, कर्मकाण्डो, अंधविश्वासों की जकड़न से मुक्त हो जाये तो मानव का स्वप्न पूरा हो जाए। कबीर मानव धर्म के प्रतिष्ठापक थे।

संदर्भ सूची

१) मार्क्स एण्ड एंडेल्स - लिटरेचर ऑफ आर्ट - पृ. २

२) फादर कमिल बुल्के - अंग्रेजी हिंदी कोश - पृ. ७३४

३) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी - कबीर - पृ. ११४

४) डॉ. रामचंद्र तिवारी - कबीर मिमांसा - पृ. ११२

५) कबीर ग्रंथावली - पद - ३६

६) कबीर ग्रंथावली - साखी - २३